मुंबई प्लस

मुंबई, रविवार, 28 जून 2009

आमंत्रित लेख

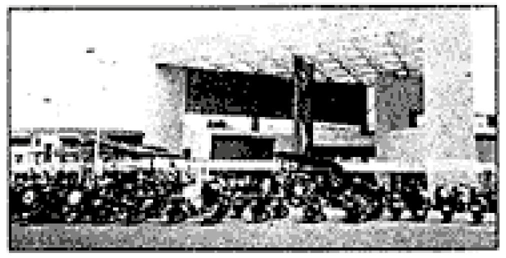

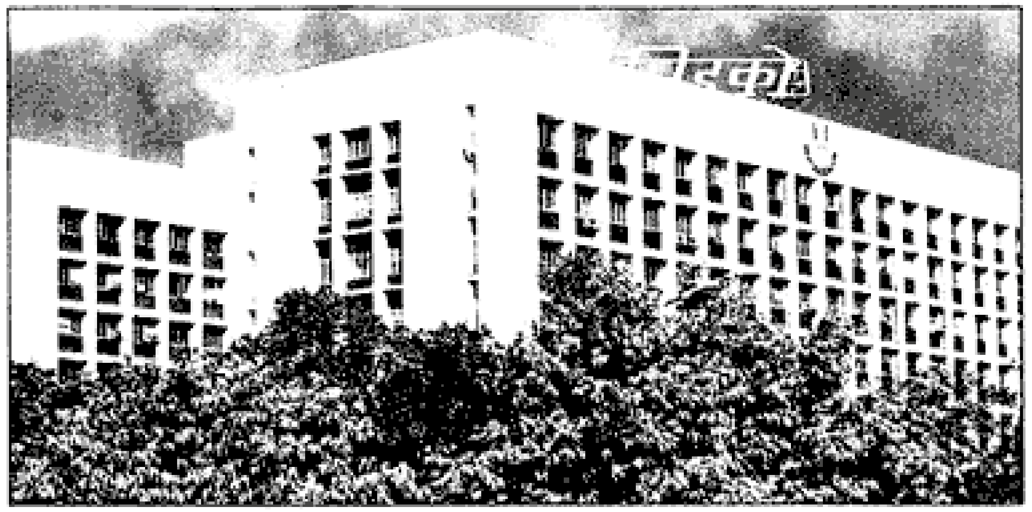

सैटेलाइट शहर का शिल्पकार सिडको

3.94 करोड़ रुपये की पूंजी, 344 वर्ग किमी. का भूभाग और एक अत्याधुनिक सैटेलाइट आर्थिक राजधानी बसाने की आकांक्षा के साथ 1970 में सिडको कार्यरत हुई. उसके सामने थी स्वयंस्फूर्त आर्थिक, समाजिक संस्कृति के निर्माण की चुनौती!

सिडको ने स्वाभाविक पर्यावरण व उपलब्ध स्वाभाविक अनुकूलता का गहरा अभ्यास करके इस क्षेत्र का सर्वांगीण विकास करने का ध्येय अपने सामने रखा. सिडको को नागरिकों के निवास, व्यापार व उद्योग से संबंधित आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ परिपूर्ण भौतिक व सामाजिक मूलभूत सुविधाओं से लबरेज पर्यावरणीय आदर्शनगर का निर्माण करना था. सिडको ने इस क्षेत्र को 14 नगरों में विभाजित करके, उन नगरों में ऐसी-ऐसी विशेषतायें पैदा कीं कि वह विशेषताएं उन-उन नगरों की अविभाज्य अंग बन गई हैं. उदाहरण के लिये यदि उत्सव चौक कहा जाय तो खारघर, विष्णुदास भावे का नाम लिया जाय तो वाशी, अर्बन हाट कहा जाये तो सीबीडी बेलापुर की छवि हमारी आंखों के आगे तैर जाती है. यह उदाहरण नगर की संस्कृति और सर्वोत्तम सुविधायें उपलब्ध कराते हुए सौंदर्यपरक दृष्टिकोण की भी याद दिलाते हैं. वहीं आदर्श योजना की परिपाटी बरकरार रखते हुए निर्मित किये गये सुंदर रेलवे स्टेशन, अंतर्राष्ट्रीय स्तर के औद्योगिक पर्यावरण और सिडको की प्रयोगशीलता की ओर इशारा करती हैं. अपने इन महत्वाकांक्षी परियोजनाओं को विश्व के सामने लाने का प्रयास सिडको ने नवी मुंबई में किया है. जिसमें नवी मुंबई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, सीईजेड, सिडको एक्जिबिशन सेंटर, खारघर हिल प्लैटू, साइंस पार्क, अर्बन हाट और प्रस्तावित सिडको गोल्फ कोर्स प्रमुख हैं. आइये इन परियोजनाओं पर डालते हैं एक नजर.

सिडको सेंट्रल पार्क को यदि भारत के भविष्य का पार्क शिरोमणि कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. नवी मुंबई के 14 उपनगरों में से केंद्र में बसे खारघर को इस परियोजना के लिये आदर्श स्थान माना गया है, क्योंकि ऐसे पार्क के लिए प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन होना महत्वपूर्ण माना जाता है. संतुलन का यह खजाना प्रकृति ने खारघर पर खुले हाथों से लुटाया है. खारघर के सेक्टर क्रमांक 23, 24, 25 में लगभग 80 हेक्टेयर भूमि में इस सपने के निर्माण के लिये सिडको ने अपनी पूरी सृजनशीलता झोंक दी है. इस पार्क के लिये अब लंबा इंतजार नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि जल्द ही इसके दरवाजे खुलने वाले हैं.

भारत भर में फैली प्रगतिशील संस्कृति व उनकी विशेषताओं का उपयोग करके सांस्कृतिक एहसास के साथ हम विविधताओं के कितने रूप आकर्षक तरीके से साकार कर सकते हैं, इसकी रूपरेखा सेंट्रल पार्क की योजना में रखी गई. थीमपार्क व इंस्ट्रूमेंटल पार्क की नवीन कल्पना के साथ एम्फीथिएटर की संकल्पना सांस्कृतिक विश्व को समृद्ध करने वाले वस्तुओं के साथ सेंट्रल पार्क में मौजूद होगी. इसके अलावा स्वाद के रसियाओं को तृप्त करने वाला फूड प्लाजा भी लोगों को आकर्षित करेगा, इसके अलावा एम्पीथियेटर की समृद्धि को बढ़ाने वाला विविध प्रदर्शनियों से सज्जित आर्ट गैलरी भी इस पार्क की शोभा बढ़ायेगी. मैदानी खेल के अलावा टेनिस, टेबल टेनिस, बॉलिंग लॉन, स्नूकर जैसे इनडोर खेल के लिये सेंट्रल पार्क में दो क्लब हाउस भी होंगे.

खारघर को मिला प्रकृति का वरदान हमेशा सिडको के लिये वरदान साबित हुआ है. इस प्राकृतिक वैभव के भीतर छिपी पर्यटन स्थल की गुणवत्ता को सिडको ने जान लिया है. खारघर की

धरती पर सह्याद्री पर्वतमाला भी खड़ी है. खारघर की इसी पर्वत शृंखला पर खारघर हिल प्लैटू आकार लेने वाला है. अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ संस्थानों से ये निविदा मंगाकर सिडको यहां डिज्नी लैंड, हॉलीवुड या रामोजी फिल्मसिटी की तरह एक अद्वितीय निर्माण की ओर कदम बढ़ा रही है. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सिडको गोल्फ क्लब का भी निर्माण किया जा रहा है. 103 हेक्टेयर के ऊंचे सपाट भूभाग पर हरे-भरे मैदान को चारों ओर से घेरे सह्याद्री पर्वत शृंखला और पांडवकड़ा की संगत में 18 हेल्स का यह कोर्स इस खेल के शौकीनों के लिये वरदान साबित होगा. पांच सितारा होटल, क्लब हाउस, गोल्फ अकादमी और ऊंचे दर्जे के निवास स्थान इस परियोजना की भव्यता को दर्शाते हैं. आस्ट्रेलिया की गोल्फ कोर्स निर्माण की विशेषज्ञ संस्था पेसेफिक, कॉस्ट डिजाइन ऑफ मेलबोर्न द्वारा बनाया जाने वाला यह गोल्फ कोर्ट भारत का एकमात्र गोल्फ कोर्स साबित होगा.

एक अलग तरह की परियोजना के रूप में सिडको विज्ञान नगरी जल्द ही गति पकड़ने वाली है, जो सिडको के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विश्व के सामने प्रस्तुत करेगी. कलात्मक और आधुनिकता सिडको के निर्माण के दो प्रमुख चेहरे हैं, क्योंकि कलात्मकता और आधुनिकता का निर्माण करना कलात्मक नजर और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संतुलन से ही संभव हो पाता है. सिडको की इसी विज्ञाननिष्ठा का प्रतीक कहलाने वाली यह परियोजना जल्द ही शुरू होने वाली है. भारत की राष्ट्रीय विज्ञान नीति के अनुसार बच्चों व प्रौढ़ों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति पैदा करने के लिये नवी मुंबई के बेलापुर और खारघर जैसे स्थान को चुना गया है. इस परियोजना के लिए सेक्टर-7, सीबीडी, बेलापुर के भारती विद्यापीठ के पीछे 18.55 हेक्टेयर क्षेत्र का चयन किया गया है. इस परियोजना के लिये पूर्व राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम का मार्गदर्शन लिया गया है. इसके लिये भारत के साथ पूरी दुनिया के सायंस पार्क की विशेषताओं का गहरा अध्ययन किया जा रहा है. विशेषकर सिंगापुर और क्वालालंपुर के सर्वोत्तम कहे जाने वाले सायंस पार्क का इसमें समावेश है. विज्ञान नगरी का निर्माण करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय निविदाएं मंगाई जा रही हैं. यह परियोजना नवी मुंबई की नई पीढ़ी की संवेदनाओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करने का सिडको का ईमानदार प्रयास है. भविष्य के गर्भ में छिपे विकास की संभावना को ताड़ने की क्षमता सिडको एक्जिबिशन हॉल द्वारा दुनिया को दिखाई देगी. यह सिर्फ सिडको ही जानती है कि वैश्विक उद्योग क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ने के लिये एक परिपूर्ण प्रदर्शन केंद्र का कितना महत्व है, क्योंकि आज तक सैकड़ों राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में शामिल होकर ही सिडको ने अपने नगर योजना की प्रवीणता को दुनिया के सामने रखा है.

प्रदर्शन केंद्रों के माध्यम से आयोजित किये जाने वाले कार्पोरेट कांफ्रेंस, औद्योगिक इकाइयों की प्रदर्शनी, कला प्रस्तुत, भव्य जलसों से विश्व की प्रगल्भता की वृद्धि होती है. वाशी स्थित सेक्टर 30अ के तीन बडे भूभाग पर यह एक्जिबिशन सेंटर बनाये जायेंगे. यह सेंटर 'बिजनेस प्रमोशन' के लिये तो बनाये जा ही रहे हैं लेकिन समाज के सभी स्तर के लोगों को आकर्षित करेंगे. मुंबई के औद्योगिक क्षेत्र के छोटे-बडे उद्योगियों, उनके व्यवसाय को राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लाभ तो मिलेगा ही लेकिन राजस्व दिलाने का मुख्य स्रोत भी बनेगा, यहां बिजनेस क्लास के लिये प्रदर्शन केंद्र, व्यवसाय केंद्र, स्वयं सहायता समूह जैसी सुविधायें भी उपलब्ध होंगी.

नवीमुंबई को ठाणे, पनवेल और धरमतर खाडी का लगभग 125 किलोमीटर का समुद्री किनारे

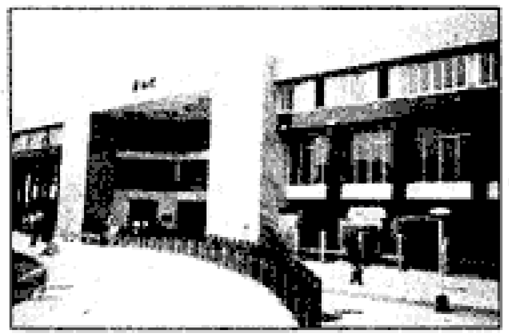

का लाभ मिला है. नवीमुंबई को मिला 1471 हेक्टेयर का यह समुद्री किनारा महाराष्ट्र की आरक्षित समुद्री किनारे 5000 हेक्टेयर का 28 प्रतिशत हिस्सा है. सिडको समुद्री किनारे की दलदली जमीन और मैंग्रोव का संरक्षण करने के लिये नेरूल में वेटलैंड सेंटर और मैंग्रोस पार्क का निर्माण करने और दलदली जमीन के विषय में सामाजिक जन जागृति पैदा करने का उत्सुक है.

इस महानगर को मिले व्यावसायिक, सामाजिक, आर्थिक, वाणिज्यिक, शैक्षणिक

पहचान के साथ-साथ सांस्कृतिक तेज भी मिला है, इसी अभिन्न संस्कृति का एक प्रतीक है, सीबीडी बेलापुर रेल्वे स्टेशन के पश्चिम में छोटी सी हरी-भरी पहाडी पर अर्बन हाट परियोजना साकार हो गई है. सिडको अर्बन हाट भारत की विविधता पूर्ण संस्कृति को नवी मुंबई से जोड़ने का एक माध्यम है. गरीब लोक कलाकारों की कलाकृतियों का बाजार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से भारत सरकार के वस्त्रोद्योग मंत्रालय ने योजना बनाई, आज प्रदेश में सर्वप्रथम इस वास्तविकता की धरात पर उतारने का श्रेय सिडको अर्बन हाट को मिला है. सबसे महत्वपूर्ण परियोजना नवी मुंबई को एक ही उड़ान में दुनिया से जोड़ने वाले नवीमुंबई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के रूप में साकार होने जा रही है. हवाई यातायात को अधिक सक्षम और सुगम बनाने के लिये यह परियोजना निजी व सार्वजनिक भागीदारी से बनाया जा रहा है. स्टेट ऑफ आर्ट सुविधाओं से कैस यह हवाई अड्डा विश्व के गिनेचुने 'ग्रीनफील्ड' हवाई अड्डों में से एक होगा, मुझे यह विश्वास है कि सिडको जल्द ही यह हवाई अड्डा देश को समर्पित करेगी. वैश्वीकरण के चलते मूलतः बदलते आर्थिक, औद्योगिक व्यवस्था व रोजगार विनिमय को दिशा देने के लिये विशेष आर्थिक क्षेत्र का सामर्थ्य सभी जानते हैं. यही सामर्थ्य नवीमुंबई को दिलाने के लिये विशेष आर्थिक क्षेत्र नवीमुंबई के आर्थिक पर्यावरण में शामिल होने की आशा है. यह सभी परियोजनाओं का निर्माण करते समय सिडको ने इस बात का ख्याल रखा है कि प्रकृति व पर्यावरण के संतुलन को कहीं खतरा नहीं पहुंचे प्राकृतिक सुंदरता और आधुनिकता का सुंदर तालमेल से यह नव निर्माण किये गये हैं. एक परिपूर्ण और अपनेपन का मिलाप सिडको ने नवी मुंबई में किया है.

-डॉ. मोहन निनावे
जनसंपर्क अधिकारी, सिडको